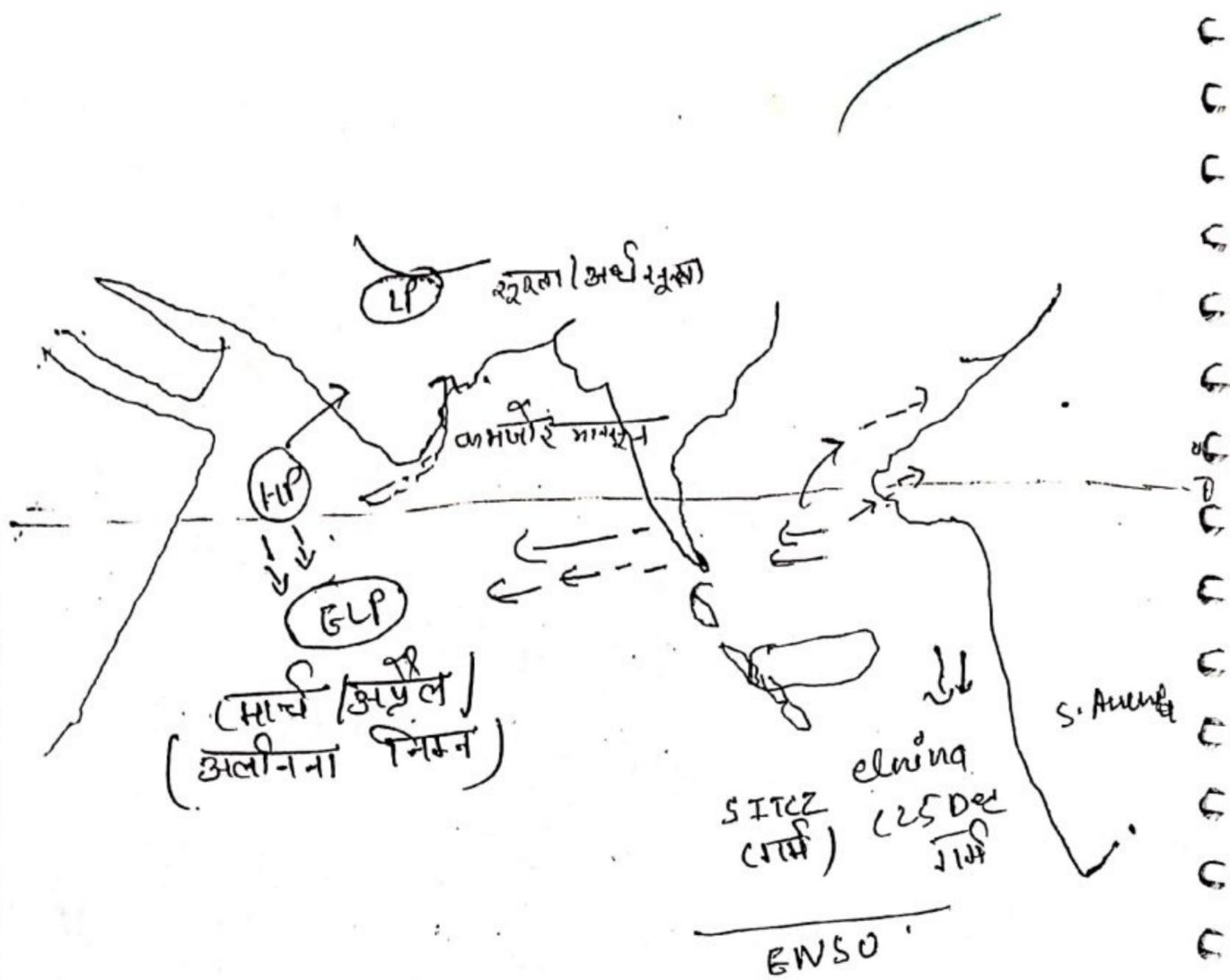


अलनीना / एलनीना प्रभाव



मानसून की सक्रियता एवं मानसून वर्षी के अलनीना गर्मी जलधारा भी प्रभावित करती है इसकी उत्पत्ति पैरू तट पर सौंठम बाल में SITCZ की स्थिति में होती है। दोनों की सम्मिलित घटना को ENSO या अलनीना दक्षिणी दोलन कहते हैं। ENSO के मजबूत होने की स्थिति में दक्षिणी महासागरों के तापमान में अधिक वृद्धि हो जाती है जिसका प्रभाव वैश्विक जलवायु परिवर्तन सहित भारतीय मानसून पर होता है। जब अलनीना हिन्द महासागर में प्रवेश कर जाती है तब इसके द्वारा मिशन

वायुदाब क्षेत्र का विकास होता है जिसे अलनीना
 निम्न कहते हैं (Alvina Low) इसके प्रभाव
 अरब सागर के उच्च वायुदाब से हवाएं
 अलनीना निम्न वायुदाब की ओर प्रभावित
 होती हैं। ऐसे में मानसून हवाओं का
 विभाजन हो जाता है और मानसून कमजोर
 हो जाता है। 2014 में भी मानसून के
 भारत में फेर से प्रवेश करने और
 प्रारंभ में शुरू का प्रभाव उत्पन्न होने का
 प्रमुख कारण अलनीना को माना जाता है।
 इसके पहले भी 2008, और 1997 का
 सूखा भी अलनीना से संबंधित है।

यदि अलनीना अधिक प्रभावी होता है तो
 पूर्वी जेट की सक्रियता के बावजूद मानसून
 अच्छा नहीं होता।

अलनीना का प्रभाव सामान्यतः 4 से 5 वर्ष
 के अन्तराल पर उत्पन्न होता है। लेकिन
 अलनीना को उत्पन्न व तापमान में अधिक
 वृद्धि की स्पष्ट वैज्ञानिक धारणा का
 अभाव है।

अलनीना के विपरीत जब दक्षिणी महासागरों
 के तापमान में कमी आ जाती है तो
 इसे ला नीना प्रभाव कहते हैं। इसके

कारण मानसून मजबूत होता है।
 लानीना को अलनीना जैसे जलधारा का
 ही उंजा रूप माना जाता है। सामान्यतः
 जब अलनीना सक्रिय नहीं होता तो यह

लानीना को विद्योत होती है, इसके प्रभाव से हिन्द महासागर के उच्च वायुदाब में वृद्ध होती है जो दक्षिण पश्चिमी मानसून को मजबूत करता है। लानीना की सक्रियता में अतिवृष्टि और बाढ़ की समस्या उत्पन्न होती है।

मानसून को प्रभावित करने वाले अन्य कारक

मानसून को कई अन्य कारक भी प्रभावित करते हैं इनमें शिमाली प्रभाव हैडली चक्र और वाकर चक्र प्रभाव प्रमुख हैं।

शिमाली चक्र तुलनात्मक ठंडी जलधारा है जिसकी उत्पत्ति ग्रीष्म काल में शिमाली तट पर होता है। इसके कारण अरब सागर के तापमान में कमी आती है जिससे उच्च वायुदाब में वृद्ध होती है जो मानसून को मजबूत करता है।

